कैम्पस कनेक्ट

(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का समाचार बुलेटिन)

फरवरी, 2026 वर्ष : 1, अंक : 7

प्रेरणा–स्रोत :

श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्रीमान योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :
प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श–मण्डल :
प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
डॉ. अश्विनी कुमार (कुलसचिव)
श्री दीनानाथ यादव (परीक्षा नियंत्रक)

सम्पादक :
प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह–सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक–मण्डल :
डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त–प्रबन्धन
श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :
श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश–272202
ईमेल :
campus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट : www.suksn.edu.in

(सम्पादन–प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कुलपति–कथन

'यो सहस्सं सहस्सेन सङ्गामे मानुसे जिते।
एकं च जेय्यमत्तानं स वे सङ्गामजुत्तमो।।

धम्मपद में भगवान बुद्ध कहते हैं– "युद्ध में सहस्रों मनुष्यों को जीतने वाले से अपने–आपको जीतने वाला आत्म–विजेता बड़ा युद्ध–विजेता है।"

क्या अभिप्राय है इसका ? अपने को जीतना क्या है ? हरेक विजय चाहता है। हरेक काम में हर कोई सफलता चाहता है। पर, हर कोई सफल नहीं होता, विजेता नहीं बनता। क्यों ? क्योंकि मात्र चाहने से सफलता नहीं मिलती। इच्छा–मात्र से विजयश्री का वरण नहीं होता। चाहते तो सभी हैं, पर सफल वही होते हैं, जिनके प्रयत्नों में भी दम होता है। सफलता हमारे कर्म में निहित है। विजय हमारी इच्छा शक्ति एवं कर्म–शक्ति के संमन्वित योग का परिणाम है। इसके लिये हमें लगना होता है। कठिन तप करना होता है। सच्ची लगन, सतत उत्साह और कठिन कर्म–साधना हमें सफलता की ओर ले जाते हैं। यहीं पर बात आती है अपने पर विजय प्राप्त करने की। संकल्प तो हमारे द्वारा कर लिया जाता है, पर उस संकल्प को पूरा करने के लिये वांछित प्रयत्न की जब बात आती है तो हमारे ही भीतर की बहुत सी वृत्तियाँ इसमें रुकावट बनती हैं। प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' में लिखते हैं–

'ज्ञान दूर, कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा पूरी क्यों हो मन की।'

हमारी इन्द्रियाँ हमको अन्यान्य चीजों की ओर आकर्षित कर हमें अपने पथ से भटकाती हैं, लक्ष्य–विरत करती हैं। हम चाहते कुछ हैं और कर कुछ और बैठते हैं। इच्छा तो हमारी बहुत ऊँची होती है, पर साधना उस स्तर की हमसे नहीं हो पाती। परिश्रम हम अपने संकल्प के अनुरूप नहीं कर पाते। फिर हम दोष देते हैं अन्यान्य बातों को। यद्यपि हम यह जानते हैं कि कमी कहाँ रह गयी।

इन्द्रियाँ हमारी हम पर सदा शासन करना चाहती हैं और बहुत हद तक वे इसमें सफल होती भी हैं। लेकिन जिसने अपनी इन्द्रियों पर शासन करना सीख लिया, उनसे नियन्त्रित न होकर उनको अपने नियन्त्रण में ले लिया, उसने मानो अपने को जीत लिया। जिसने अपने को जीत लिया, उसे दुनिया जीतना भी असम्भव नहीं। जो अपने को ही न जीत सका, वह दूसरे को भला क्या जीतेगा ? इसलिये आत्मजय का महत्त्व जितना अध्यात्म–साधना के क्षेत्र में है, उतना ही जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी है। हमारे विद्यार्थियों को यह बात समझनी होगी कि यदि उन्हें जीवन में विजय पानी है तो पहले अपने पर विजय पानी होगी।

हमारा अन्तस राग–द्वेषों से युक्त है। यह राग–द्वेष हमारे कर्ममार्ग की बाधाएं हैं। आहार, निद्रा और काम– इन तीनों को नियन्त्रित करना हमारी आत्मविजय की पहली सीढ़ी है। अपने भीतर के भय, संशय, आलस्य और निराशा को निकालकर उनके स्थान पर आशा, विश्वास, उत्साह और कर्मठता को मजबूती से स्थापित करना अपने अन्तस को दुर्जेय बनाने जैसा है। अपने लक्ष्य पर एकटक दृष्टि और उसकी ओर उत्साह एवं विश्वास से भरे कदम ही मंजिल तक पहुँचने का जरिया हैं। इधर–उधर का भटकाव न सिर्फ हमारी मंजिल को हमसे दूर करता है, अपितु कई बार उस तक पहुँचना असम्भव ही बना देता है। यह समय हमारे विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह उनके जीवन–निर्माण का समय है। भविष्य को उज्ज्वल बनाने की साधना का अवसर है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विजेता बनने हेतु अपने को सशक्त करने का समय है, जिसके लिये आवश्यक है आत्मजयी होना। यदि उन्होंने अपनी कुवृत्तियों को जीत लिया और सद्वृत्तियों को जीतने दिया तो जीवन निश्चित ही आनन्दमय होगा, इसमें सन्देह नहीं।

–कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।
बुद्ध की करुणा, अहिंसा, प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति–पारावार,
ज्ञान का आलोक, मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा–प्रीति, गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन, परम निर्मल, पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का, आनन्द का, आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था, तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा, महाकरुणा, शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय, ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

(गीत–रचना : अनन्त मिश्र)

राही क्यों मन हुआ उदास

राही क्यों मन हुआ उदास!
दो पग ही चलने में तेरी
उखड़ गयी क्यों सांस?
निश्चय ही यह पथ है दुस्तर,
पग पर गहवर, पग पर प्रस्तर,
कहीं रूढ़ियाँ बाधा बनकर,
कहीं कँटीली झाड़ी मग पर;
उलझाकर पग–पग पर राही
करते तुझे हताश!
पर इनसे घबराना ही क्या,
तपा आग न वह कंचन क्या,
झेला न झंझा वह तरु क्या,
बिना शूल के फूल भला क्या!
भला धूप बिन कोई जाये
क्यों छाया के पास?
धँस शूलों में फूल चुने जो,
प्रस्तर भर गह्वर में दे जो,
काट झाड़ियाँ साफ करे जो,
रोड़े पग से चूर करे जो,
मनुज वही, जो कागज के
फूलों में भरे सुवास!

कोकिल मधुर रस जग घोल

कोकिल मधुर रस जग घोल!
आज कौए ही झगड़–लड़,
काँव अपनी हैं रहे रड़
हो चुके सुन कान आहत, मन उठा है डोल!
हो जगत आहत चुका है,
पा नहीं राहत सका है,
है प्रतीक्षा दे सुना कोई मधुर दो बोल!
छेड़ दे निज तान गहरी,
भर हृदय में, मंगल–लहरी
सुन उठे मन झूम वाणी कर उठे किल्लोल!
कोकिल मधुर रस जग घोल!

–हरीशकुमार शर्मा 'पराया'

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया 77वाँ गणतंत्र दिवस

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में 77वाँ गणतंत्र दिवस अत्यंत हर्षोल्लास एवं गरिमामय वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने की। इस अवसर पर कुलपति महोदया द्वारा ध्वजारोहण किया गया, जिसके उपरांत राष्ट्रगान तथा राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' का भावपूर्ण सामूहिक गायन संपन्न हुआ।

अपने संबोधन में कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शोध एवं नवाचार को केंद्र में रखकर निरंतर प्रगतिशील है। उन्होंने कहा कि शिक्षा में शोध और नवाचार के माध्यम से ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में वैज्ञानिक सोच का विकास काफी हद तक परिसर के शैक्षिक वातावरण पर निर्भर करता है। इस दृष्टि से हम सभी का सामूहिक प्रयास आवश्यक है कि विश्वविद्यालय परिसर में सशक्त शैक्षिक वातावरण विकसित कर इस क्षेत्र के बहुआयामी विकास, विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में, अपनी महत्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित करें।

उन्होंने आगे कहा कि उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति हो रही है। न केवल नए शिक्षण संस्थानों का सृजन हो रहा है, बल्कि गुणवत्ता, शोध और नवाचार की दिशा में अनेक अभिनव प्रयोग भी किए जा रहे हैं, जो प्रदेश एवं देश की उच्च शिक्षा के उज्ज्वल भविष्य का संकेत हैं।

कार्यक्रम के दौरान कुलपति महोदया ने एनसीसी कैडेट्स की परेड का निरीक्षण किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की मासिक समाचार पत्रिका 'कैंपस कनेक्ट' के दिसम्बर अंक का विमोचन भी कुलपति महोदया द्वारा किया गया। उक्त अवसर पर तीनों संकायाध्यक्षों– प्रो. सौरभ, प्रो. प्रकृति राय एवं प्रो. नीता यादव सहित पत्रिका के सम्पादक प्रो. हरीशकुमार शर्मा तथा सम्पादक मण्डल के सदस्य डॉ. रेनू त्रिपाठी, डॉ. शिवम शुक्ल, डॉ. सत्यम मिश्र भी मंच पर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार, परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव, विभिन्न संकायों के विभागाध्यक्ष, आचार्यगण, अधिकारी, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्रा उपस्थित रहे। संपूर्ण आयोजन राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और शैक्षिक चेतना से ओत–प्रोत रहा।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में भव्यता के साथ आयोजित हुआ उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के बुद्ध प्रेक्षागृह में आयोजित उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस कार्यक्रम दिनांक 24.01.2026 को माननीय कुलपति प्रो

कविता शाह के आशीर्वाद एवं कुलसचिव डॉ अश्वनी कुमार की प्रेरणा तथा अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो नीता यादव की अध्यक्षता में बहुत ही बेहतर तरीके से आयोजित किया गया। उक्त आयोजन में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के विभिन्न संकायों एवं विभागों के छात्र–छात्राओं द्वारा उत्तर प्रदेश से संबंधित लोकगीत, लोकनृत्य, भाषण, रंगोली एवं व्यंजन तथा नाट्य प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया गया। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।

उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस कार्यक्रम में पूर्व माध्यमिक विद्यालय, बर्डपुर एवं संविलयन माध्यमिक विद्यालय, काशीपुर, शिक्षा क्षेत्र बर्डपुर के छात्र–छात्राओं द्वारा शानदार समूह नृत्य एवं भाषण कार्यक्रम की मनभावन प्रस्तुति की गई। उक्त कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रो हरीश कुमार शर्मा, प्रो सत्येन्द्र कुमार दुबे, प्रो प्रकृति राय, प्रो सुनील कुमार श्रीवास्तव, प्रो सौरभ कुमार, डॉ सुनीता त्रिपाठी, डॉ विशाल गुप्ता, डॉ वन्दना गुप्ता, डॉ अविनाश प्रताप सिंह, डॉ रविकांत शुक्ला, डॉ हृदय

कांत पाण्डेय, डॉ सत्यम मिश्रा, डॉ आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ किरण गुप्ता, डॉ सरिता सिंह, डॉ नीरज सिंह, डॉ रेनू त्रिपाठी, डॉ अमित कुमार साहनी, डॉ अब्दुल हफीज, तथा अन्य प्राध्यापकगण, छात्र–छात्राएं एवं कर्मचारीगण अधिक संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं स्वागत डॉ यशवन्त यादव, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग द्वारा तथा अध्यक्षीय उद्बोधन एवं आभार ज्ञापन प्रो नीता यादव अधिष्ठाता छात्र कल्याण जी द्वारा किया गया।

इस अवसर पर 'उत्तर प्रदेश का विकास और विरासत' विषय पर भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर एमएससी की छात्रा सुहासिनी श्रीवास्तव, द्वितीय

स्थान पर एमएससी की छात्रा आरती सनी तथा तृतीय स्थान पर एम. ए. के छात्र अतुल उपाध्याय रहे। कार्यक्रम के संयोजक डॉ विवेक कुमार वर्मा के नेतृत्व में भाषण प्रतियोगिता संपन्न हुई ।

एनसीसी द्वारा रन फॉर स्वदेशी का आयोजन

दिनांक 12.01.2026 को स्वामी विवेकानन्द जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की एन.

सी. सी. इकाई द्वारा रन फॉर स्वदेशी (स्वदेशी संकल्प रन) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, एनसीसी अधिकारी, एनसीसी कैडेट्स, छात्रा–छात्राओं व कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया।

दिल्ली में आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की सहभागिता

भारत और नेपाल के बीच साझा बौद्ध विरासत को वैश्विक कूटनीति, क्षेत्रीय सहयोग और शांति स्थापना के सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से "Global Diplomacy and Regional Cooperation: India–Nepal Partnership in Buddhist Heritage" विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन 30–31 जनवरी, 2026 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, मैक्समूलर मार्ग, नई दिल्ली में किया गया। सेमिनार का उद्घाटन सत्र 30 जनवरी को संपन्न हुआ।

इस अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन साउथ एशिया फाउंडेशन, नेपाल; लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय (नेपाल); सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, उत्तर प्रदेश तथा मालवीय सेंटर फॉर पीस एंड कंफ्लिक्ट रिसर्च, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। नालंदा विश्वविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू (नेपाल) मिड–वेस्ट यूनिवर्सिटी (नेपाल), एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी, पुणे तथा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर सहयोगी संस्थाओं के रूप में सम्मिलित रहे।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने कहा कि भारत और नेपाल का संबंध केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सभ्य तागत और आध्यात्मिक है, जिसकी जड़ें भगवान बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं में निहित हैं। उन्होंने कहा कि करुणा, अहिंसा और मध्यम मार्ग के सिद्धांत आज के वैश्विक संकटों के समाधान का मार्ग प्रशस्त करते हैं। प्रोफेसर शाह ने विश्वविद्यालयों की भूमिका को अकादमिक कूटनीति का सशक्त माध्यम बताते हुए भारत–नेपाल के बीच शोध, शिक्षा और सांस्कृतिक सहयोग को और मजबूत करने पर बल दिया।

सेमिनार में लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुबर्ण लाल बज्राचार्य, जामिया मिलिया इस्लामिया के कुलपति प्रो. मजहर आसिफ, काठमांडू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अच्युत प्रसाद वाग्ले, मिड–वेस्ट

यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. डॉ. ध्रुव कुमार गौतम, नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सचिन चतुर्वेदी सहित अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम में भारत में नेपाल के राजदूत डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा, पूर्व विदेश सचिव एवं सांसद राजदूत हर्षवर्धन श्रृंगला, भारत के नेपाल में पूर्व राजदूत मंजिव सिंह पुरी, राजदूत पंकज सरन, राजदूत अशोक के. कांथा, राजदूत रंजीत राय, राजदूत जयंत प्रसाद, राजदूत अमरेंद्र खातुआ सहित अनेक वरिष्ठ राजनयिकों ने अपने विचार व्यक्त किए।

इसके अतिरिक्त यूनेस्को चेयर फॉर पीस, बीएचयू के प्रो. प्रियंकर उपाध्याय, पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट ओस्लो की प्रो. अंजू शरण उपाध्याय, आईडीएसए के वरिष्ठ फेलो डॉ. उत्तम कुमार सिन्हा, त्रिभुवन विश्वविद्यालय के कार्यकारी निदेशक डॉ. मृगेन्द्र बहादुर कार्की, लुंबिनी विकास ट्रस्ट के ज्ञानिन राय, प्रो. बसंत बिदारी, प्रो. अभय कुमार सिंह, डॉ. निवेदिता रे, प्रो. मनोज मिश्र, डॉ. अजय यादव, डॉ. गौतम चिकरमण, श्री अनिल चित्रकार, श्री प्रदीप गुप्ता, श्री अवधेश माथुर सहित बड़ी संख्या में विद्वानों और विशेषज्ञों ने सहभागिता की।

इस अवसर पर संगोष्ठी के अकादमिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC) के निदेशक प्रोफेसर सौरभ ने कहा कि बौद्ध विरासत पर आधारित अकादमिक सहयोग गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और वैश्विक शांति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि ऐसे अंतरराष्ट्रीय सेमिनार विश्वविद्यालयों के बीच शैक्षणिक गुणवत्ता, शोध और वैश्विक संवाद को सुदृढ़ करते हैं।

दो दिवसीय सेमिनार के प्रथम दिन विभिन्न सत्रों में बौद्ध विरासत, सांस्कृतिक कूटनीति, क्षेत्रीय सहयोग, शिक्षा, पर्यटन, शांति अध्ययन और सतत विकास से जुड़े विषयों पर गहन विमर्श किया गया।

महाशिवरात्रि की प्रार्थना

महाशिवरात्रि का है पर्व, शिव की साधना कर लें।
जगत् कल्याणकर्ता शम्भु की आराधना कर लें।

शम्भु दाता बड़े हैं और त्राता हैं जगत भर के।
सहज मिलते उन्हें, जो याद करते हैं ध्यान धर के।
चलो हम भी हृदय में भक्ति की दृढ़ भावना भर लें।

हमें दें भक्ति शिवशंकर, हमें दें शक्ति भुवनेश्वर।
सफल जीवन को करने की, हमें दें युक्ति अविनश्वर।
मिले वरदान हमको ऐसा, यों हम प्रार्थना कर लें।

सदा सन्मार्ग हम पकड़ें, कुसंगति में नहीं जकड़ें।
किसी थोथी सफलता पर, न झूठी शान में अकड़ें।
कुमार्गी हों कभी भी न, हम ऐसी कामना कर लें।

रहें नीरोग तन से और मन निश्चिन्त–निर्भय हो।
हृदय निर्मल रहे नित, आत्मबल की न पराजय हो।
सत्य–पथ पर चलें हरदम, असत् का सामना कर लें।

–पराया

सड़क सुरक्षा के लिये

सड़क सुरक्षा के लिये, मन में भर लें चाह।
पग–पग रखें सँभालकर, चलें सँभलकर राह।।
चलें सँभलकर राह, सावधानी से देखें।
जीवन है अनमोल, बचाना इसको सीखें।
कर लें पालन नियम, इसी में सबकी रक्षा।
सीखें और सिखायें सबको सड़क सुरक्षा।।

दोपहिया पर हेलमेट, चौपहिया पर बेल्ट।
सदा लगाकर के चलें, करें सुरक्षित फेल्ट।।
करें सुरक्षित फेल्ट, नहीं गति सीमा लांघें।
दिखे लाल बत्ती, चौराहा नहीं उलाँघें।
खुद भी बचें, बचायें औरों को भी भैया।
चलें चार पहिया से या लेकर दोपहिया।।

बड़ा आँकड़ा देश में, चढ़ जाता है भेंट।
मृत्यु घूमती सड़क पर, करती नित आखेट।
करती नित आखेट, जाल फैलाए अपना।
रहें सजग प्रतिपल, जो इससे चाहें बचना।
सौ वर्षों तक रहें मस्त, नित करें भांगड़ा।
यूँ जीवन का करें, मृत्यु से बड़ा आंकड़ा।।

(कैम्पस कनेक्ट डेस्क)

सम्पादकीय

अन्धकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।

एक प्रसिद्ध कवि की की ये बहु–उद्धृत होने वाली पंक्तियाँ किसी राष्ट्र, समाज या जाति के जीवन में साहित्य की महत्ता का बखूबी बखान करती हैं। साहित्य किसी देश या समाज का बहुत बड़ा सम्बल होता है। सुख–दुख को सहन करने, हर्ष–विषाद को व्यक्त करने, जीवन–संघर्षों से जूझने एवं बीती को बिसार कर आगे बढ़ने हेतु साहित्य अपने जातीय जीवन में सहारे का काम करता है, उत्प्रेरक का काम करता है। यह मानना उचित नहीं होगा कि साहित्य किसी देश की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब मात्र होता है और उसकी उन चित्तवृत्तियों को परिष्कृत–परिवर्तित–परिवर्धित करने में कोई भूमिका नहीं होती। साहित्य युगीन परिस्थितियों से प्रभावित ही नहीं होता, उन्हें प्रभावित भी करता है और एक बार यदि वे प्रभाव जनमानस में जड़ें जमा गये तो फिर बहुत दूर तक उस समाज की जीवन–यात्रा में साथ देते रहते हैं। भक्ति–साहित्य इसका बड़ा प्रमाण है। स्वाधीनता–आन्दोलन में साहित्य के सहारे ही हँसते–हँसते अपने प्राण न्योछावर कर देने वाले वीरों की गाथाएं इसका साक्ष्य हैं। 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है' जैसी पंक्तियों या गीता का साथ लेकर एक बड़े उद्देश्य के हित अपने जीवन को मामूली समझ सहज अर्पित कर देना साहित्य की शक्ति का ही अहसास कराता है।

यूँ तो साहित्य विभिन्न अवसरों पर आवश्यकता के समय अपनी महती भूमिका का निर्वाह करता है, परन्तु एक योद्धा में शौर्य–भाव उद्दीप्त करने में भी इसकी विशेष भूमिका होती है और इसका भरपूर उपयोग किया भी जाता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण तो है 'श्रीमद्भगवद्गीता'– जिसने अर्जुन के भीतर लगभग मर चुकी युद्ध–भावना को पुनर्जीवित किया। हिन्दी क्षेत्र में प्रचलित 'आल्हा' भी एक ऐसा ही काव्य है। कहते हैं कि फर्रुखाबाद के अंग्रेज जिला–कलक्टर चार्ल्स इलियट की अदालत में एक मुकदमा आया, जिसमें एक व्यक्ति ने किसी का कत्ल कर दिया था। अदालत में उस व्यक्ति ने साफगोई से कत्ल करना स्वीकार भी कर लिया। तब कलक्टर ने पूछा कि 'तुमने ऐसा क्यों किया?' इस पर उस व्यक्ति ने एक पंक्ति कही– 'जाको बैरी जिन्दा घूमै, ताके जीवन कौ धिक्कार।' जज (कलक्टर) ने वकील से अर्थ पूछा और जानकर वह हैरान रह गया कि कोई व्यक्ति किसी का कत्ल करने के लिये किसी काव्य की पंक्ति को आधार बना सकता है! जानने पर उसे पता चला कि यह पंक्ति 'आल्हा' काव्य की है, जिसकी लोकगायकों द्वारा मौखिक रूप से प्रस्तुत दी जाती है। इससे प्रभावित होकर उसने सन् 1865 में अनेक भाटों की सहायता से लिपिबद्ध कराकर आल्हखण्ड का संकलन तैयार करवाया। सिद्ध है कि जनता के सोये उत्साह को जगाकर उसमें शौर्य–भाव उद्दीप्त करने की दृष्टि से साहित्य और उसमें भी काव्य विशेष महत्त्व रखता है। इसीलिये राष्ट्रीय संकट के समय कविगण वीर भावों से भरी कविताएँ लिखकर राष्ट्र को उद्बुद्ध करने का प्रयास करते हैं।

सच कहा जाये तो भारत के बारे में यह कहना उचित ही होगा कि हमारा समाज साहित्य से बना हुआ समाज है और हमारी संस्कृति साहित्य की निर्मिति, उपलब्धि एवं निधि है। भारत के सम्बन्ध में सांस्कृतिक राष्ट्र कहने का आधार भी यही है। इतनी अधिक भाषाएं, इतने क्षेत्रगत वैविध्य, इतनी भिन्न जीवन–पद्धतियाँ, इतने प्रकार के जाति–पन्थगत भेद आदि के रहते हुए भी हम यदि भावनात्मक रूप से एक रहे हैं और हैं तो इसका कारण हमारी साझी सांस्कृतिक विरासत है जिसका अनुरक्षण साहित्य ने किया है। चाहे हमारे देश की किसी भी भाषा या बोली का साहित्य रहा हो, सबने इस दायित्व को बखूबी निभाया है।

हम कह सकते हैं कि भारत एक है साहित्य के क्षेत्र में और इस एकता का निर्माण यहाँ के साहित्यकारों ने किया है। भारत एक है संस्कृति के क्षेत्र में और इस एकता के निर्माण में ऋषियों, मुनियों, विचारकों, चिन्तकों, कलाकारों, साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है। भारत एक है अपनी धर्म–साधना के क्षेत्र में, जिसमें देश भर में पैदा हुए महान यायावर धर्मसाधकों की बड़ी भूमिका रही है। हजारों वर्ष पूर्व जब देश में आवागमन के ऐसे सुलभ साधन न थे, पुस्तकों के लेखन, प्रकाशन और प्रचार–प्रसार की ऐसी व्यवस्थाएं नहीं थीं, संवाद की आज जैसी सुलभ सुविधाएं नहीं थीं, तब हमारे महान पूर्वजों ने देश जोड़ने का कार्य किया। ऐसी व्यवस्था की कि राजनीतिक रूप से भले हम कभी कितने ही विभक्त रहे, पर भावनात्मक धरातल पर, सांस्कृतिक आधार पर, धार्मिक दृष्टि से एक बने रहे। शताब्दियों तक हमें मिटाने के प्रयत्न हुए, लेकिन हम मिटे नहीं तों वे हममें कूट–कूटकर भरे गये संस्कार थे, जिन्होंने हमें सुदृढ़ बनाया, सशक्त बनाया, अडिग बनाया। इन संस्कारों के निर्माण में बड़ा योगदान साहित्य का है। चाहे हमारी धर्म–साधनाएं हों, चाहे सांस्कृतिक परम्पराएं– सबका वाहक साहित्य रहा। साहित्य ने ही पूरे देश में एक जैसे विचारों को फैलाने में अपना महत् दायित्व निभाया।

कह सकते हैं कि हमारा समाज साहित्य से बना समाज है। हमारी संस्कृति साहित्य में रची–पगी संस्कृति है। वह साहित्य में अक्षुण्ण है। हमारा धर्म साहित्य के माध्यम से ही हमारे अन्तस में समाहित है। आखिर हमारा मानस किनसे निर्मित है? जिसे हम अपनी संस्कृति कहते हैं उसका उत्स क्या है? रामायण, महाभारत, गीता, भागवत, पंचतन्त्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर जैसे कुछ बहुमूल्य ग्रन्थों तथा इनके ही आधार पर रचित लोक साहित्य को अपने जीवन से निकाल देने पर क्या बचता है हमारे पास? समूचे भारत का साहित्य एवं लोक साहित्य इन तथा इन जैसे अन्यान्य बहुत से ग्रन्थों से ही तो अनुप्राणित है।

साहित्य हमारे लिये मात्र मनोरंजन का साधन नहीं रहा; वह जीवन–निर्माण का, मानसिक संस्कार का, अन्तःकरण के परिष्कार का माध्यम भी रहा है। हमारी चेतना के निर्माण में साहित्य की बड़ी भूमिका रही है। इसलिये यह समझना कि साहित्य क्या कर सकता है या साहित्य से क्या हो सकता है, एक नासमझी का प्रश्न ही हो सकता है। आधुनिक हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माताओं में अग्रणी स्थान रखने वाले आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी अपने लेख 'साहित्य की महत्ता' में लिखते हैं– "आँख उठाकर जरा और देशों तथा जातियों की ओर तो देखिये। आप ये देखेंगे कि साहित्य ने वहाँ की सामाजिक और राजकीय स्थितियों में कैसे–कैसे परिवर्तन कर डाले हैं. साहित्य ने वहाँ समाज की दशा कुछ–की–कुछ कर दी है; शासन–प्रबंध में बड़े–बड़े उथल–पुथल कर डाले हैं; यहाँ तक कि अनुदार और धार्मिक भावना को भी जड़ से उखाड़ फेंका है। साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है, वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती।" इसलिए वे तो आगे यहाँ तक लिखते हैं कि "अतएव समर्थ होकर भी जो मनुष्य इतने महत्त्वशाली साहित्य की सेवा और अभिवृद्धि नहीं करता, अथवा उससे अनुराग नहीं रखता, वह समाजद्रोही है, वह देशद्रोही है, वह जातिद्रोही है; किंबहुना, वह आत्मद्रोही और आत्महन्ता भी है।"

समाज, संस्कृति एवं साहित्य– इन तीनों में ही बड़ा अच्छा रिश्ता होता है। साहित्यकार का दायित्व है कि वह ऐसा साहित्य रचे जो समाज को जोड़े। उसके सामने एक आदर्श रखे। अति यथार्थवाद के नाम पर वह कुत्सा का प्रचार करने वाला ऐसा साहित्य न बन जाये कि वह सकारात्मक पक्षों को भी नकारात्मक दृष्टि से दिखाकर समाज का अहित करने में लग जाये। समाज में बुराइयाँ हो सकती है, संस्कृति अपसंस्कृति बन सकती है, परन्तु इनका निदान भी सत्साहित्य ही है। यदि साहित्य मजबूती के साथ खड़ा है, उसका उद्देश्य लोकमंगल है, जनता तक उसकी पहुँच है; तो इन बुराइयों पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। इसलिये जितना अच्छा साहित्य रचा जाना आवश्यक है, उतना ही लोगों तक उसका पहुँचना भी आवश्यक है। हमारे पूर्वजों ने ऐसी व्यवस्थाएं कीं कि हममें से प्रत्येक को साहित्य का अध्ययन अनिवार्य बना दिया। यह अनिवार्यता धार्मिक क्रिया–कलापों से लेकर विभिन्न संस्कारों, व्रत–पर्व–अनुष्ठानों आदि के अवसरों पर साहित्य की सहयोगिता के रूप में देखने को मिलती है। इसलिये हमारे लिये आवश्यक है कि हम अपने साहित्य से जुड़ें, कुछ–न–कुछ नियमित पढ़ने का अभ्यास बनायें। चाहे हम किसी भी विषय के विद्यार्थी हों, पर साहित्य को अपने जीवन में अवश्य स्थान दें, क्योंकि अपने समाज और संस्कृति को जानने–समझने का तो यह एक अच्छा माध्यम है ही, मनुष्य के भीतर की मनुष्यता को बचाने का भी एक बहुत उपयोगी माध्यम है।

भारतीय संस्कृति में कमल

कमल भारतीय संस्कृति का प्रधान प्रतीक है। कमल को हम सारे प्रतीकों का राजा भी कह सकते हैं। भारतीय संस्कृति में कमल की सुगन्ध आ रही है। अतः इस कमल–पुष्प में इतना बड़ा और अच्छा अर्थ कौन–सा है ?

ईश्वर के सारे अवयवों को हम कमल की उपमा देते हैं। कमल–नयन, कमल–वदन, कर–कमल, चरण–कमल, हृदय–कमल आदि कहने में कौन–सी मधुरता है ? कमल में अलिप्तता का गुण है। पानी में रहकर भी वह पानी के ऊपर रहता है, कीचड़ में रहकर भी वह कीचड़ के ऊपर फूलता है। कमल अनासक्त है। हम कहते हैं कि ईश्वर करके श्री अकर्ता ही रहता है। वह इस सारे संसार का व्यवहार चलाता है; लेकिन यह सारा व्यवहार वह अनासक्त रहकर ही चलाता है।

कमल में अलिप्तता है। इसी प्रकार उसमें दूसरा गुण यह है कि वह बुराई में से भी अच्छाई ग्रहण कर अपना विकास करता है। वह कीचड़ में से भी रमणीयता ग्रहण कर लेता है। वह रात–दिन तपस्या करके अपना हृदय मकरंद से भर लेता है।

उसका मुँह सूर्य की ओर रहता है। प्रकाश को देखते ही वह फूल उठता है। प्रकाश के समाप्त होते ही वह बन्द हो जाता है। प्रकाश मानो कमल का प्राण है। भारतीय संस्कृति प्रकाशोपासक है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' भारतीय संस्कृति की आरती है।

कमल शतपत्र है, सहस्रपत्र है। कुछ कमलों में सौ और कुछ में हजार पँखुड़ियाँ होती हैं। भारतीय संस्कृति में भी सौ पँखुड़ियाँ हैं। सैकड़ों जातियाँ,

अनेक वंश, अनेक धर्म, अनेक पन्थ सभी का सार ग्रहण करके वह बढ़ती है। वह एक–एक नवीन पँखुड़ी जोड़ देती है। भारतीय संस्कृति का कमल अभी पूरा खिला नहीं है। वह अभी खिल रहा है। विश्व के अन्तकाल तक वह फूलता रहेगा। भारतीय संस्कृति अनन्त पँखुड़ियों का पुष्प बनेगी, क्योंकि पृथ्वी अनन्त है, काल अनन्त है, ज्ञान अनन्त है।

खिले हुए कमल–पुष्प के गीत गाते हुए सैकड़ों भ्रमर आते हैं; लेकिन कमल उनकी ओर ध्यान नहीं देता। भारतीय संस्कृति अपनी प्रशंसा के गीत गाती हुई बैठी नहीं रह सकती। हाँ, यदि संसार चाहे तो भले ही उसकी प्रशंसा करे। भारतीय संसार तो बिना हो–हल्ले और बाजे–गाजे के पल्लवित–पुष्पित होती रहेगी। संसार को गीता की स्तुति करने दीजिये। उसे बुद्ध की महिमा गाने दीजिये। उसे गांधीजी को महात्मा कहने दीजिये। उसे रवीन्द्रनाथ को महर्षि कहने दीजिये। भारतीय संस्कृति अपने बालकों से कहती है, ''कर्म करो, निन्दा–स्तुति छोडकर अपने ध्येय के साथ एकरूप हो जाओ। यदि आप स्वकर्म में इतने तल्लीन हो जायंगे तो कीर्ति अपने आप आपके पास दौड़ी हुई आने लगेगी। संसार अपने आप प्रशंसा के गीत गायेगा।''

कमल कहता है, ''अनासक्त रहो। प्रकाश की पूजा करो। अमंगल में से मंगल ग्रहण करो, तपस्या करो। केवल सत्कर्म करते रहो। नई–नई बातें ग्रहण करते रहो।'' यदि प्रश्न किया जाय कि भारतीय संस्कृति का अर्थ क्या है तो उसका उत्तर होगा 'कमल'।

(सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित साने गुरूजी की पुस्तक 'भारतीय संस्कृति' (पृ. 259–60) से साभार)

उठो धरा के अमर सपूतो

–द्वारका प्रसाद माहेश्वरी

उठो धरा के अमर सपूतों
पुनः नया निर्माण करो।
जन–जन के जीवन में फिर से
नई स्फूर्ति, नव प्राण भरो।
नया प्रात है, नई बात है,
नई किरण है, ज्योति नयी।
नई उमंगें, नई तरंगे,
नई आस है, साँस नयी।
युग–युग के मुरझे सुमनों में,
नई–नई मुस्कान भरो।
डाल–डाल पर बैठ बिहग कुछ
नये स्वरों में गाते हैं।
गुन–गुन–गुन–गुन करते भँवरे
मस्त हुए मंडराते हैं।
नवयुग की नूतन वीणा में ।
नया राग, नवगान भरो।
कली–कली खिल रही इधर
वह फूल–फूल मुस्काया है।
धरती माँ की आज हो रही
नई सुनहरी काया है।
नूतन मंगलमय ध्वनियों से,
गुंजित जग उद्यान करो।
सरस्वती का पावन मंदिर
यह संपत्ति तुम्हारी है।
तुममें से हर बालक इसका
रक्षक और पुजारी है।
शत–शत दीपक जला ज्ञान के
नवयुग का आह्वान करो।
उठो धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो।

(सुप्रसिद्ध कवि)

सहज आभास

–प्रो० सौरभ

मधुर गीत के सुर जीवन में,
नव सृजन की स्वांस लिए,
नए जोश के पंख लगा के,
मन भर के आकाश लिए,
अंजुल भर सारे ही जग में,
अद्भुत अटल, विश्वास लिए,
बह संगम, अम्बुद सरवर में,
गगन अनंत, अनुप्रास लिए,
सरल सत्य हस्तरेखाओं का,
विश्व रेखाओं से माप लिए,
सुबोध सुगम जीवन पथ पे,
सकल सानंद प्रभास लिए,
'सौरभ' मन के स्वर जान ले,
सद रेखाओं में विन्यास लिए,
करुणा कर्म के प्रण साध के,
चल विश्व सहज आभास लिए

अध्यक्ष–प्रबन्ध अध्ययन विभाग

बैल भाई

(लोककथा)

बैल को मारते–मारते किसान थक गया, पर बैल ने कहा कि तुम मुझे उठा ही क्या लोगे ! किसान भी जिद पर अड़ा था। आज आर या पार करने की ठान चुका था। इस बैल ने बहुत परेशान कर रखा था। जब–तब बैठ जाता था ओर यदि एक बार बैठ गया तो फिर चाहे जो कर लो, उठता ही नहीं था। काम छोड़ ही देना पड़ता था, तब कहीं जाकर अपनी मर्जी से उठता था। किसान तंग आ गया था। इतने पैने मार चुका था, उसके शरीर में जगह–जगह इतनी अरई भी चुभो चुका था कि बैल के शरीर से खून छलछला आया था; पर वह बैल ही क्या जो उठ जाये ! किसान के सिर पर भी खून सवार हो चला था कि आज भले ही बैल मर ही क्यों न जाये, पर आज वह परिणति तक पहुँचाकर ही रहेगा। रोज–रोज की चिक–चिक से पीछा तो छूटेगा। नौजवान किसान था, बैल भी नयी ही उम्र का था। बैल ने भी जैसे तय कर रखा था कि आज भले जान ही क्यों न चली जाये; पर मजाल किसकी, जो उसे उठा सके !

तभी अचानक किसान ने एक रानी की डोली अपनी ओर आती देखी। डोली जा तो सड़क पर रही थी, पर उसकी ओर मुड़ गयी थी। डोली पास आयी और उसमें से रानी उतरी। उसने हाथों से मना करते हुए कहा– ''अहा हा, मारो मत!''

किसान ने कहा– 'इसने बहुत दुखी कर रखा है, मैं क्या करूँ? मुझे भी यह अच्छा नहीं लगता है, बाद में रोना आता है। पर, यह जब–तब ऐसे ही करता है। अब मेरे पास कोई रास्ता नहीं बचा है। सब प्रयत्न करके हार गया। अब तो आज जो होना है, वह हो ही जाये एक बार में।''

रानी ने कहा– ''अच्छा, थोड़ा रुको। मैं कुछ करती हूँ। अगर यह उससे सुधर जाता है तो ठीक, नही तो फिर तुम्हारी जो मर्जी हो करना।''

रानी बैल के पास गयी, उसके कान में थोड़ी देर कुछ मन्त्र सा फूँका। बैल एकदम से उठकर खड़ा हो गया। रानी ने कहा कि ''अब तुम अपना काम करो। अब यह तुम्हें परेशान नहीं करेगा।'' कहकर वह चलती बनी।

और उधर वह बैल! अब तो ऐसा चलने लगा कि दूसरे बैल को उसके साथ लगना मुश्किल हो गया। यह दौड़े, कि वह दौड़े। एक पैना अपनी पीठ पर आने का अवसर न दे। किसान को बड़ा अचरज हुआ। वह हल रोककर डोली की ओर दौड़ा। डोली अभी आँखों से ओझल न हुई थी। जब वह दौड़ा तो रानी ने भी देख लिया और अपनी डोली रुकवा ली। किसान पास पहुँचा। रानी ने कहा– ''अब क्या हुआ? क्या बैल फिर बैठ गया ?''

किसान ने हाथ जोड़े, कहा– नहीं रानी साहिबा। बैल बैठा नहीं, वह तो अब ऐसे चल रहा है कि दूसरा बैल उसका संग नहीं दे पा रहा है।''

रानी ने प्रश्नवाचक मुद्रा में कहा– ''फिर? तो अब क्या समस्या है?''

किसान ने कहा– ''महारानी जी, मैं इसलिये दौड़कर आपके पास आया हूँ कि आपसे वह मन्त्र प्राप्त कर लूँ जो आपने बैल के कान में पढ़ा था। मैं इस बैल को जानता हूँ। अभी तो आपके मन्त्र के प्रताप से चल पड़ा है, लेकिन वह अपनी आदत से बाज आने वाला नहीं। इसलिये आप वह मन्त्र मुझे दे देंगी तो वह फिर जब बैठेगा तो मैं वही मन्त्र पढ़ दूँगा। में उसे मारना नहीं चाहता। बड़ी तकलीफ हाती है। मजबूरी में मारना पड़ता है। क्या करूँ, उसे बेच भी नहीं सकता। इतनी बदनामी उसकी हो गयी है कि कोई उसे खरीदना भी नहीं चाहता। मुझे तो उसे जीवन भर झेलना ही है। सो, यदि आपकी कृपा हो जाये, तो मेरा काम बन जाये।''

रानी ने विश्वासपूर्वक मुस्कराते हुए कहा कि 'अब वह नहीं बैठेगा। जाओ, निश्चिन्त रहो।'

किसान हाथ जोड़कर उसके सम्मान में बिछ गया और कहने लगा– ''नहीं महारनी साहिबा, आप नहीं जानतीं। मैं उसे अच्छी तरह से जानता हूँ। बहुत परेशान किया है उसने मुझे और वह फिर करेगा ही। इसलिये कृपा करके आप मुझे वह मन्त्र दे ही दीजिए।''

रानी की आँखों में आँसू से भर आये। कहने लगी– ''असल में कुछ मन्त्र मेरे पास है ही नहीं। मैं तुम्हें क्या दूँ? लेकिन अब तुम्हारा वह बैल बैठेगा नहीं। यह मुझे विश्वास है।''

किसान ने कहा कि ''आप टाल रही हैं। मैं यह मान ही नहीं सकता। कुछ तो आपने उसके कान में पढ़ा था। तभी वह उठा। बिना उसके तो वह उठने ही वाला नहीं था।'' (शेष पृ. 8 पर)

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु एवं माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज, सिद्धार्थनगर के मध्य चिकित्सा सहयोग हेतु समझौता–ज्ञापन हस्ताक्षरित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर एवं माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज, सिद्धार्थनगर के मध्य आज एक महत्वपूर्ण समझौता–ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता विशेष रूप से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शिक्षा के क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से किया गया है।

इस समझौता ज्ञापन का प्रमुख उद्देश्य सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में आगामी समय की कार्य योजना में प्रस्तावित बी.एससी. नर्सिंग जैसे महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम के सुचारु संचालन हेतु आवश्यक चिकित्सीय एवं प्रयोगात्मक प्रशिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित करना है। नर्सिंग पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को व्यावहारिक चिकित्सा प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए किसी मान्यता प्राप्त चिकित्सालय से संबद्धता आवश्यक होती है, इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह समझौता किया गया है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय एवं माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज दोनों संस्थानों की भूमिका इस क्षेत्र के लोगों, विशेषकर विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोनों संस्थान मिलकर शिक्षा और चिकित्सा के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित कर इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के विद्यार्थियों को नर्सिंग जैसे रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के लिए सुदूर जाना पड़ता है, भविष्य में यदि यह पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय में प्रारंभ हो जाता है तो स्थानीय विद्यार्थियों को लाभ इसका बहुत लाभ भी होगा और मानव सेवा का पुनीत कार्य भी सम्भव है। नर्सिंग शिक्षा न केवल रोजगार की दृष्टि से बल्कि मानव सेवा की भावना के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कुलपति ने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय एवं मेडिकल कॉलेज की भूमिका केवल पाठ्यक्रमों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के व्यापक हित में कार्य करते हुए क्षेत्र के समग्र विकास में भी योगदान दिया जा सकता है। दोनों संस्थान मिलकर रक्तदान, देहदान एवं अंगदान जैसे पवित्र कार्यों के प्रति समाज, विशेषकर युवाओं को जागरूक कर सकते हैं, जिससे विकसित भारत के निर्माण की दिशा में सार्थक प्रयास संभव होंगे।

मेडिकल कॉलेज की प्रधानाचार्य प्रो. राजेश मोहन ने कहा कि मेडिकल कॉलेज कम्युनिटी हेल्थ के क्षेत्र में अपने पाठ्यक्रमों से आगे बढ़कर समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के साथ जुड़कर क्षेत्रीय विकास में मेडिकल कॉलेज अपना उल्लेखनीय योगदान दे सकेगा। उन्होंने बताया कि टेलीक्लीनिक के माध्यम से मेडिकल कॉलेज के विशेषज्ञ चिकित्सक सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के साथ जुड़कर चिकित्सीय परामर्श एवं सहयोग उपलब्ध कराएंगे, जिसके लिए आगे विस्तृत कार्ययोजना तैयार की जाएगी।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार, वित्त अधिकारी श्री रामेंद्र मौर्य, आईसीसी निदेशक प्रो. सौरभ, रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. लक्ष्मण सिंह, सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी डॉ. अविनाश प्रताप सिंह उपस्थित रहे। वहीं मेडिकल कॉलेज की ओर से प्रो. विष्णु अवस्थी, प्रो. नौशाद आलम, प्रो. हसमतुल्लाह, डॉ. आशीष कुमार शर्मा, अरविंद कुमार सिंह सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

विशेष रूप से इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक श्री श्याम धनी राही की गरिमामयी उपस्थिति रही। उन्होंने कहा कि शासन स्तर पर दोनों शिक्षण संस्थानों को जो भी सहयोग आवश्यक होगा, उसे उपलब्ध कराने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा। दोनों संस्थान अपने–अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित हैं तथा कुलपति प्रो. कविता शाह एवं प्रधानाचार्य प्रो. राजेश मोहन की रचनात्मक दृष्टि से क्षेत्र के लोगों एवं समाज को व्यापक लाभ मिलेगा। यह समझौता–ज्ञापन शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करते हुए क्षेत्रीय विकास में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानन्द एवं भारत रत्न श्री भगवान दास की जयन्ती संपन्न

उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ के निर्देश के क्रम में तथा कुलपति प्रो कविता शाह की प्रेरणा से राष्ट्रीय युवा दिवस 12 जनवरी, 2026 के अवसर पर स्वामी विवेकानन्द एवं भारत रत्न श्री भगवान दास का जन्म–जीवनोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना की भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई इकाई, अहिल्याबाई होलकर इकाई एवं नेताजी सुभाष चन्द्र बोस इकाई के संयोजकत्व में कला संकाय भवन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी विवेकानन्द एवं भारत रत्न श्री भगवान दास की प्रतिमाओं पर पुष्प अर्पित कर किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. हरीश कुमार शर्मा पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग एवं अधिष्ठाता, कला संकाय ने भारत रत्न श्री भगवान दास के जीवन–चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका जीवन आदर्शों, मानव–मूल्यों और राष्ट्रसेवा से ओतप्रोत था। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को भारतमाता को समर्पित कर दिया। एक कुशल शिक्षक, दार्शनिक एवं सामाजिक चिन्तक के रूप में उन्हें सम्पूर्ण भारतवर्ष ने स्वीकार किया, जिसका प्रतिफल उन्हें भारतरत्न सम्मान के रूप में प्राप्त हुआ। उन्होंने एक प्रेरक प्रसंग साझा करते हुए बताया कि भारतरत्न प्रदान करते समय तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भगवान दास जी का चरण स्पर्श करते हुए कहा था कि राष्ट्रपति होने के नाते सम्मान प्रदान कर रहा हूँ और एक नागरिक होने के नाते उनके जीवन–मूल्यों को नमन कर रहा हूँ।

स्वामी विवेकानन्द के जीवन और विचारों पर अपने वक्तव्य में डॉ. सच्चिदानन्द चौबे विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द का जीवन धर्म, ज्ञान, भक्ति एवं आदर्श मानव मूल्यों से परिपूर्ण था। शिकागो यात्रा से प्रारम्भ हुई उनकी विचार–यात्रा को सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकार किया। अल्प आयु के बावजूद उनके विचार और मूल्य असीमित हैं, जो आज भी भारत सहित पूरे विश्व के युवाओं के लिए मार्गदर्शक हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर जिन दो महान विभूतियों को हम स्मरण कर रहे हैं, वे हमें मानवीय,

दार्शनिक एवं सामाजिक मूल्यों को आत्मसात कर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। कार्यक्रम में आगत अतिथियों का स्वागत डॉ. वंदना गुप्ता सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग द्वारा किया गया।

इस अवसर पर प्रो. दीपक बाबू, प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे, डॉ. अखिलेश कुमार दीक्षित, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. मनीष शर्मा, डॉ. रेनू त्रिपाठी, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, डॉ. रविकांत शुक्ला, डॉ. हृदयकांत पाण्डेय, डॉ. अमित कुमार साहनी, डॉ. अरविन्द कुमार रावत, डॉ. नीरज कुमार सिंह, डॉ. देवबख्श सिंह, डॉ. जय सिंह यादव सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सम्पूर्ण कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. यशवन्त यादव, डॉ. रक्षा एवं डॉ. सरिता सिंह के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. यशवन्त यादव सहायक आचार्य, इतिहास विभाग द्वारा किया गया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में मनाया गया पराक्रम दिवस

पराक्रम दिवस के उपलक्ष्य में माननीय कुलपति प्रो कविता शाह के आशीर्वाद एवं कुलसचिव डॉ अश्वनी कुमार की प्रेरणा से कला संकाय, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना की नेताजी सुभाष चन्द्र बोस इकाई द्वारा आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी के चित्र पर पुष्पार्चन के साथ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित बी.बी.ए. विभाग के सहायक आचार्य एवं विश्वविद्यालय के संपत्ति अधिकारी डॉ विमल चन्द्र वर्मा ने कहा कि नेता जी का जीवन त्याग, समर्पण एवं बलिदान का जीवन था। यदि हम विकसित भारत के संकल्प को पूरा करना चाहते हैं तो हमें नेताजी के मार्गदर्शन एवं पथ–कुशलता के साथ साथ उनके राष्ट्र–प्रेम की भावना को आत्मसात करना होगा। नेताजी का जनमानस को जगाने हेतु दिया गया नारा 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा' भारत को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु आज बहुत अधिक प्रासंगिक है। उनका जीवन, क्रांतिकारी विचार, और आजाद हिन्द फौज की स्थापना आज के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ वंदना गुप्ता, सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग ने कहा कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जीवन बलिदान, पराक्रम, एवं कठोर त्याग तथा देशभक्ति से ओतप्रोत था। नेताजी सदैव हम सभी के मन, मस्तिष्क में व्याप्त रहेंगे। कार्यक्रम में स्वागत–संबोधन एवं आभार–ज्ञापन डॉ यशवन्त यादव, कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई इकाई द्वारा किया गया। कार्यक्रम संयोजन तथा संचालन डॉ सरिता सिंह, कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना नेता जी सुभाष चन्द्र बोस इकाई सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी संकायों के छात्र–छात्राओं के साथ–साथ डॉ मनीषा वाजपेई, डॉ विनीता रावत, डॉ किरण गुप्ता एवं डॉ अब्दुल हफीज आदि प्राध्यापकगण की भी उपस्थिति रही।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में वसन्त–पंचमी एवं निराला–जयंती सम्पन्न

वसन्त पंचमी एवं निराला जयंती के उपलक्ष्य में माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह के आशीर्वाद एवं कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार की प्रेरणा तथा प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे, आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग के संयोजकत्व तथा राष्ट्रीय सेवा योजना भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई इकाई के तत्वावधान में सरस्वती पूजन कार्यक्रम का आयोजन सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कला संकाय में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञान की देवी वीणावादिनि माँ सरस्वती की वन्दना, आराधना एवं प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पार्चन के साथ किया गया। कार्यक्रम में साकेत मिश्र ने अपने भक्तिमय भजनों एवं संगीत से सभी उपस्थित जनों को ज्ञान की देवी वीणावादिनि मां सरस्वती से जुड़ने का अहसास कराया।

कार्यक्रम में डॉ रेनू सिंह, डॉ अंजुलता श्रीवास्तव, डॉ रिंकी सिंह, डॉ विनोद दीक्षित, डॉ वंदना गुप्ता, डॉ सरिता सिंह तथा सुश्री सुहानी, श्री अतुल कुमार उपाध्याय, श्री कुशल तिवारी एवं अन्य के द्वारा सरस्वती भजन, गायन एवं कविता पाठ किया गया। कार्यक्रम के संयोजक अध्यक्ष प्रो सत्येन्द्र कुमार दुबे जी ने महाकवि निराला द्वारा रचित 'राम की शक्ति पूजा' तथा सरस्वती भजन एवं गीत सुनाकर सभी उपस्थित जन को आनंदित होने का अवसर प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन एवं आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना की भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ यशवन्त यादव, द्वारा किया गया। आभार–ज्ञापन डॉ विशाल गुप्ता, विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ अविनाश प्रताप सिंह, डॉ रविकांत शुक्ला, डॉ हृदय कांत पाण्डेय, डॉ मनीष शर्मा, डॉ अब्दुल हफीज, डॉ हरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ मुन्नू खान एवं विभिन्न कॉलेजों से मूल्यांकन हेतु आए प्राध्यापकगण एवं छात्र–छात्रा उपस्थित रहे।

डॉ. लक्ष्मण सिंह द्वारा संपादित पुस्तक प्रकाशित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के लिए यह एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक उपलब्धि है कि "Synthesis, Applications and Future Perspectives of Smart Nano & material" शीर्षक से बेंथम साइंस, सिंगापुर द्वारा अंतरराष्ट्रीय शोध–आधारित पुस्तक प्रकाशित हुई हैं, जिसका संपादन डॉ. लक्ष्मण सिंह, सह–प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय द्वारा किया गया है।

यह पुस्तक स्मार्ट नैनो–मैटेरियल्स के संश्लेषण, उनके बहुआयामी अनुप्रयोगों तथा भविष्य की संभावनाओं पर केंद्रित है। स्मार्ट नैनो–मैटेरियल्स वे उन्नत पदार्थ होते हैं जो तापमान, प्रकाश, पीएच, विद्युत अथवा चुंबकीय क्षेत्र जैसे बाह्य उद्दीपनों के प्रति संवेदनशील प्रतिक्रिया देते हैं। इन सामग्रियों का उपयोग ऊर्जा भंडारण, पर्यावरण संरक्षण, जैव–चिकित्सा, सेंसर तकनीक, उत्प्रेरण तथा सतत विकास जैसे क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रहा है।

इस पुस्तक में देश–विदेश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों के शोध लेख शामिल हैं, जिससे यह पुस्तक विद्यार्थियों, शोधार्थियों और उद्योग जगत से जुड़े विशेषज्ञों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ बन गई है। पुस्तक में वर्तमान शोध प्रगति के साथ–साथ नैनो–विज्ञान एवं नैनो–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भविष्य की चुनौतियों और अनुसंधान की दिशाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। इस

अवसर पर डॉ. लक्ष्मण सिंह ने बताया कि इस पुस्तक का उद्देश्य मूलभूत शोध और व्यावहारिक अनुप्रयोगों के बीच सेतु स्थापित करना तथा युवा शोधकर्ताओं को नवाचार एवं सतत तकनीकों की ओर प्रेरित करना है।

माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह जी ने भी उन्हें बधाई देते हुए कहा कि यह प्रकाशन सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की अनुसंधान–उन्मुख सोच और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उसके निरंतर योगदान को दर्शाता है। यह पुस्तक स्नातकोत्तर विद्यार्थियों, पीएच.डी. शोधार्थियों एवं सामग्री विज्ञान से जुड़े शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। विज्ञान संकाय की डीन प्रोफेसर प्रकृति राय ने भी उन्हें इस उपलब्धि पर बधाई दी।

(बुद्ध प्रसंग)
भिक्खुनीसंघ

तथागत बुद्ध जब कपिलवस्तु के न्यग्रोधाराम में विहार कर रहे थे तो कपिलवस्तु के अनेक पुरुष स्वेच्छा से प्रव्रजित होकर भिक्खुसंघ में सम्मिलित हो रहे थे। उस समय कपिलवस्तु की स्त्रियां भी संघ में प्रविष्ट होने के लिए उत्सुक हो रही थीं। स्त्रियों ने महाप्रजापति गौतमी के नेतृत्व में तथागत बुद्ध के पास जाकर आग्रह किया कि तथागत! धर्म व विनय के अनुसार स्त्रियों को भी प्रव्रजित होने का अवसर प्रदान करें। परंतु तथागत ने कुछ व्यावहारिक कारणों से महाप्रजापति गौतमी से कहा कि आप ऐसे विचार को मन में न उत्पन्न होने दें। तब महाप्रजापति गौतमी ने पुनः आग्रह किया, परंतु तथागत के द्वारा कोई समुचित उत्तर न मिलने के कारण वे दुखित मन से महल वापस लौट आई। तथागत बुद्ध चारिका करते हुए वैशाली की तरफ चल दिए।

कपिलवस्तु की स्त्रियाँ विनय के अनुसार प्रव्रजित होकर श्रोतापत्ति–फल, सकृदागामीफल, अनागामीफल और अर्हत्व–फल का साक्षात्कार करने को लालायित थीं। महाप्रजापति गौतमी के नेतृत्व में सभी स्त्रियाँ एकत्र हुई और विमर्श करके निर्णय लिया कि तथागत के सामने स्वयं परिव्राजिका बनकर उपस्थित हुआ जाए और तथागत से पुनः आग्रह किया जाए।

तब महाप्रजापति गौतमी अपने केश काटकर, काषाय वस्त्र पहन करके सैकड़ों स्त्रियों के साथ वैशाली गई। उस समय तथागत बुद्ध महावन के कूटागारशाला में ठहरे हुए थे। महाप्रजापति गौतमी व अन्य स्त्रियाँ तथागत बुद्ध के समक्ष उपस्थित हईं। उस समय उनके पैर सूजे हुए थे, कपड़े धूल से सने हुए थे। चेहरा मलिन व उदास था। तथागत बुद्ध ने उनके आग्रह को पुनः विचारित नहीं किया। वे बहुत दुखी होकर, कूटागारशाला के बाहर आकर खड़ी हो गईं। उसी समय आयुष्मान आनंद कूटागारशाला की तरफ आए और माता महाप्रजापति गौतमी व अन्य सैकड़ों स्त्रियों की दयनीय तथा मलिन दशा को देखकर व्यथित हो गए। वे तथागत बुद्ध के पास गए, आदर–अभिवादन कर एक तरफ बैठ गए। तथागत बुद्ध से निवेदन करते हुए पूछा– क्या कारण है कि तथागत घर से बेघर हुई धर्मशील स्त्रियों को धर्म व विनय के अनुसार प्रव्रजित होने की आज्ञा प्रदान नहीं करते। इस संबंध में उन्होंने कई बार अनुज्ञा हेतु आग्रह किया परंतु तथागत मौन रहते। अंत में उन्होंने कहा कि तथागत जानते हैं कि ब्राह्मणों का मत है कि शूद्र और स्त्रियाँ कभी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकती, क्योंकि वे जन्मतः अपरिशुद्ध हैं और पुरुषों की तुलना में निम्नवर्ग की हैं। इसलिए वे शूद्रों व स्त्रियों को प्रव्रज्या नहीं देते। क्या इस संबंध में तथागत की दृष्टि ब्राह्मणों जैसी है। तब तथागत ने कहा– आनंद ! मुझे गलत मत समझो, मैं पुरुष व स्त्रियों में इस दृष्टि से भेद नहीं करता बल्कि कुछ व्यावहारिक कारणों से स्त्रियों को धम्म में प्रव्रजित करने पर विचार नहीं कर रहा हूँ।

महाप्रजापति गौतमी के अटल व अथक प्रयास तथा आयुष्मान आनंद के आग्रह पर तथागत ने आठ प्रमुख नियमों का पालन स्वीकारिता सुनिश्चित करने के पश्चात स्त्रियों को प्रव्रज्या की स्वीकृति प्रदान कर दी। ये आठ गुरुधम्म नियम निम्नलिखित हैं–

1. भिक्खनीसंघ में चाहे जितने वर्षों तक भिक्खुनी रही हो तो भी उन्हें चाहिए कि छोटे–बड़े सभी भिक्खुओं को प्रणाम करें।
2. जिस गांव में भिक्खु न हो, वहां भिक्खुनी रहें।
3. हर पाक्षिक में उपोसथ किस दिन है और धम्मोपदेश सुनने कब आना है, ये बातें भिक्खुनी, भिक्खुनीसंघ से पूछ लें।
4. भिक्खुनी को चातुर्मास (वर्षावास) के बाद भिक्खुसंघ तथा भिक्खुनीसंघ की प्रवारणा करनी चाहिए।
5. भिक्खुनी जिन्होंने गुरुधम्म स्वीकार किया है, उन्हें दोनों संघों में पक्ष मानना करनी चाहिए।
6. किसी भी कारण से आक्रोश न करें तथा भिक्खु को अपशब्द न कहें।
7. जिसने दो वर्ष तक धम्म का अध्ययन किया हो, ऐसी भिक्खुनी को दोनों संघ उपसंपदा दें।
8. भिक्खु, भिक्खुनी को उपदेश विशेष परिस्थितियों में ही दें।

इसके बाद महाप्रजापति गौतमी ने कपिलवस्तु की 500 स्त्रियों के साथ धम्म और विनय की प्रव्रज्या ग्रहण की। महाप्रजापति गौतमी भिक्खुनीसंघ के प्रति निष्ठावान थीं, उन्होंने बहुत ही सफलतापूर्वक भिक्खुनीसंघ का संचालन किया था। तथागत बुद्ध के धम्म के प्रति उनकी निष्ठा व एकाग्रता इतनी अधिक प्रबल थी कि वे तथागत को पुत्र भावना के स्थान पर गुरुभावना से आदर व सम्मान देती थीं। महाप्रजापति गौतमी ने तथागत के सद्मार्ग (जो समानता व सद्चारिता पर आधारित था) का प्रचार–प्रसार करने में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया था।

प्रव्रज्या के समय तथागत बुद्ध ने वैशाली में धम्मोपदेश दिया था कि जो धम्म सराग के स्थान पर विराग, संयोग के स्थान पर वियोग, संग्रह के स्थान पर दान, इच्छावृत्ति के स्थान पर इच्छाओं की कमी, असंतोष के स्थान पर संतोष, भीड़ के स्थान पर एकान्त, उद्योग के स्थान पर अनुद्योग, दुर्भरता के स्थान पर सुमरता के महत्त्व को जानता है, वही धम्म है, विनय है, शास्ता का शासन है।

(सम्यक प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित श्रीपति प्रसाद चौधरी की पुस्तक 'कपिलवस्तु' (पृ. 30–32) से साभार)

(पृ. 5 का शेष.)

रानी ने कहा– ''तो सुनो। यदि तुम सच्चाई जानना ही चाहते हो तो तुम्हें भी वही सच्चाई बता देती हूँ जो मैंने बैल को उसके कान में बतायी थी। लेकिन उससे पहले तुम एक सच्ची कहानी सुनो।'' तब रानी ने बताया कि पूर्व जन्म में तुम दो भाई थे। तुम्हारा छोटा भाई बहुत नाकारा और निकम्मा था। तुम तब भी कर्मठ और दयावान थे। वह कुछ करता ही नहीं था। जो कुछ थोड़ा–बहुत करता भी था, उससे गुजर नहीं होती थी। तुम्हारी उसने बहुत चोरी की है। फसल के समय तुम्हारे आँगन में पड़ी तुम्हारी फसल में से ही कुछ उठा लाता था। तुम जानते भी थे, तो भी कुछ नहीं कहते थे। लेकिन उसकी पत्नी बड़ी धर्मनिष्ठ और ईमानदार थी। जो कुछ वह चुराकर लाता था, कूट–पीसकर उसे तो खिला देती थी, पर स्वयं उसके द्वारा चोरी करके लाये गये अन्न का एक दाना भी ग्रहण नहीं करती थी, भले ही उसे भूखा सोना पड़ता। अपनी मेहनत–मजदूरी से जो कुछ प्राप्त कर पाती थी, उसी से अपना गुजारा करती थी।''

किसान ने कहा कि 'इससे क्या सिद्ध हुआ?'

रानी ने कहा कि इससे सिद्ध यह हुआ कि आज बैल के रूप में तुम्हारे घर जो आया है, वह पिछले जन्म का तुम्हारा वही छोटा भाई है और मैं उसकी वही पत्नी हूँ। मैंने चूँकि सत्कर्म किये, सदाचरण का पालन किया, उसका फल मुझे यह मिला है कि मैं आज रानी हूँ और तुम्हारे छोटे भाई को उसके कुकर्मों का फल मिला है। उसने तुम्हारा बहुत अन्न चोरी किया है, उसी को चुकाने के लिये वह बैल बनकर तुम्हारे घर आया है। मैंने उसे यही याद दिला दिया कि पिछले जन्म के कर्मों का फल तो इस रूप में भोग रहे हो। एक अवसर मिला है, मेहनत करके अपने उस ऋण से मुक्त हो जाओ, अन्यथा न जाने किन–किन रूपों में तुम्हें यह भुगतना पड़ेगा। उन्होंने इस बात को समझ लिया, वे सुधर गये। मुझे इस बात की खुशी है कि कम–से–कम अब उनका आगे का जीवन सुधर जायेगा।''

किसान को तो काटे खून नहीं। हतप्रभ रह गया। वहीं सिर पर हाथ रखकर बैठ गया। उसकी आँखों से ऐसे आँसू बहने लगे कि रुकें ही न। बार–बार मन में यह खयाल आये कि हाय, मैंने अपने भाई को इतना मारा। ऐसा जालिम जैसा व्यवहार उसके साथ किया। रानी ने भी उसे बहुत समझाया। सांत्वना दी। डोली चली गयी। वह लौटकर खेत पर आया। बैल के गले लग गया। फूट–फूटकर रोने लगा। खूब रोया, जी भरके। बैल की भी आँखों से आँसू टपक रहे थे। फिर उसने उसके सब नाथ–पगहा खोल दिये और कहा कि भाई तुझ पर मेरा जो भी ऋण रहा हो, मैंने अपनी ओर से सब माफ किया। तुझ पर मेरा कुछ भी बकाया नहीं। तेरा जब तक का भी जीवन हो, तू मेरे घर में अब भाई बनकर ही रहेगा। तुझ पर कोई बन्धन नहीं। जो चाहे सो खा, जहाँ चाहे वहाँ बैठ। आज से मैं तुझे कुछ नहीं कहने वाला। बस, एक विनती है कि किसी और का नुकसान न करना। मेरी हर वस्तु पर आज से तेरा अधिकार है।''

पर, यह क्या हुआ ? किसान ने यकायक देखा कि बैल फिर धड़ाम से बैठ गया। इस बार उसने उसे मारने के लिये पैना नहीं उठाया। अपना हाथ आगे बढ़ाया, उसे प्यार से सहलाने के लिये। लेकिन यह क्या ? बैल तो शान्त पड़ चुका था। उसकी आँखों में छलछलाये आँसू अब भी भरे हुए थे। लेकिन, ऋण–मुक्त होने के साथ ही वह जीवन–मुक्त भी हो चुका था।

किसान दहाड़ें मारकर रोने लगा।

... ...

– ''मनुष्य साधारण धर्मा पशु है, विचारशील होने से मनुष्य होता है और निःस्वार्थ कर्म करने से वही देवता भी हो सकता है।''

– ''मनुष्य अपनी दुर्बलता से भली–भाँति परिचित रहता है। परन्तु उसे अपने बल से भी अवगत होना चाहिए।''

– ''प्रत्येक स्थान और समय बोलने के योग्य नहीं होते।''

– ''श्रेय के लिये मनुष्य को सब त्याग करना चाहिए।''

–जयशंकर प्रसाद